श्री जी गोसदन
नोएडा

गो संदेश

वर्ष : 13 • अंक : 5 • अगस्त, 2025

सम्पादकीय

आदरणीय बन्धुवर,

सादर अभिवादन।

आशा है आप सानन्द होंगे। शहरी क्षेत्रों में वर्षा के कारण मौसम बहुत सुहाना–सा बना हुआ है। वहीं पहाड़ी क्षेत्रों व मैदानी क्षेत्रों में जहाँ बाढ़ का प्रकोप बना हुआ है, सभी बड़ी परेशानी में हैं। हम सभी सहानभूतिपूर्वक उनके साथ हैं।

वर्षा जल संचयन पर आपको आन्दोलित करने वाला एक लेख इस अंक में समाहित है। हम लोग 1989 में नोएडा आये थे। तब जल स्तर मुश्किल से 5' पर था और आज यह 125' पर है। जल संचयन पर पिछले वर्षों में न तो चेतना जगायी गयी न ही कोई काम हुआ। सरकार ने जल संचयन पर नियम तो बनाये पर जन चेतना के अभाव में आम नागरिक ने उस को भी एक सरकारी बंदिश मानकर व्यवहार किया। अपने–अपने संस्थानों में जल संचयन का नाटक किया और उस नाटक को सरकारी अधिकारियों से स्वीकृत कराने के लिए सुविधा शुल्क देकर काम चलाया गया। अगर जन चेतना जगायी होती व नागरिकों को यह कार्य उनके कर्तव्यपूर्ति के रूप में बताया जाता तो आज अनेक लोग पूरी गम्भीरता से इस कार्य को कर रहे होते। आज Borewell लगाना प्रतिबन्धित है। ऐसी कोई कोठी या 400–500 मीटर से बड़ा संस्थान आपको नहीं मिलेगा जहाँ Borewell नहीं लगा हो। सरकारी अधिकारी इनका निरीक्षण करने लगें तो सर्वत्र त्राहिमाम मच जायेगा। सरकारी स्तर पर Boor well लगाने की अनुमति मिलती है पर शर्त होती है जितना पानी आप निकालेगें उससे 6 गुना पानी संचित करके पृथ्वी में डालना पड़ेगा।

जल संचयन एक नागरिक कर्तव्य के रूप में हम सभी के मध्य चर्चा का विषय बने। हम अपना जल संचयन इकाई का उचित निर्माण अपने आवास व संस्थान में करें व उसको चर्चा का विषय भी बनायें। मित्र मण्डली में अन्य लोगों को भी प्रेरित करें। सरकारी स्कूलों में व ऐसे स्थानों में जो

शेष पृष्ठ 3 पर...

अध्यक्ष की कलम से

परम स्नेही मित्रगण,

सादर नमन वन्दन एवं अभिनन्दन!

में समस्त श्री जी गो सदन परिवार की ओर से आप सभी स्वजनों की समृद्धि, खुशहाल जीवन की ईश्वर व गौमाता से कामना करता हूँ व आप सभी परिवारजनों का जीवन सदैव स्वस्थ एवं प्रसन्नचित रहे।

मित्रों अगस्त माह का हवन भव्यता एवं दिव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। हवन में लगभग 500 लोग उपस्थित रहे। हवन में सुख–शान्ति एवं समृद्धि के लिए सभी ने अपनी आहुति दी एवं गौमाता को हरा चारा, दाना व गुड़ खिलाया।

मित्रों आपको जानकर खुशी होगी कि गौशाला की बेबसाइट shreejeegausadan.com अब दोबारा से चालू हो गयी है। आप सभी लोगों से अनुरोध है बेबसाइट को देखें और अपने सुझाव हमें दें।

गौशाला में 15 अगस्त, 2025 को स्वतन्त्रता दिवस बड़े धूम–धाम से मनाया गया, इसी के साथ 15 अगस्त को संयोजक मण्डल की बैठक हुई जिसमें इस बार 9 सदस्य नये बनें।

मित्रों 16 अगस्त, 2025 को कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें श्री देवेश मोहन (रोटरी क्लब नौएडा एलिगेन्स) यजमान के रूप में शामिल हुए।

गौशाला में 17 अगस्त, 2025 को नोएडा डायवेटिक फोरम ने स्वास्थ्य कैम्प लगाया गया जिसमें गौशाला कर्मचारी एवं अन्य परिवारों सहित 500 लोगों ने स्वास्थ्य जाँच का लाभ उठाया।

मित्रों इस महीने गो सेवा आयोग के सदस्य श्री विनोद गर्गाचार्य जी, नोएडा अर्थोटी से महाप्रबंधक श्री ए. के अरोड़ा जी, श्री सौरभ जी (CGM हापुड़) ने गौशाला का दौरा किया और गौशाला के कार्यो का सराहा।

शेष पृष्ठ 2 पर...

मासिक हवन

दिनांक : रविवार, 7 सितम्बर, 2025 • समय : प्रातः 9.00 बजे • स्थान : गोशाला प्रांगण

यजमान : इस बार के हवन में अन्य यजमानों से अलग नोएडा एंटरप्रेन्योर एसोसिएशन (NEA) की कार्यकारिणी ने यजमान के रूप में बैठने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की है।

श्री रवींद्र कुमार, पैन ओएसिस; श्री देवेंद्र खरबंदा, नोएडा; श्री शशिकांत, ग्रे. नोएडा; श्री नरेन्द्र सिंह, नोएडा; श्रीमती अरुणा चौधरी, CDR फार्म, गाजीपुर, दिल्ली; श्रीमती सुनीता मूलचंद कंसल, श्रीमती अनु बख्शी - कनीशा जी; श्री विपुल/वैभव गुप्ता; श्री नितिन कंसल (कुसुम इलेक्ट्रिकल); श्रीमती ऊषा श्रीवास्तव; श्रीमती सुमन महेश गुप्ता; CA चिंकी सतीजा एवं CA नवनीत; मधु निझावन; श्री विपिन मल्हन, अध्यक्ष NEA; श्री वी के सेठ, महासचिव; श्री शरद जैन, कोषाध्यक्ष; श्री धर्मवीर शर्मा; श्री राकेश कोहली; श्री राजन खुराना; श्री संदीप विरमानी; श्री अमित तारा; श्री सुधीर श्रीवास्तव; श्री कमल कुमार; श्री एच के गौतम; श्री नवनीत अग्रवाल; श्री असीम जगिया; श्री अनूप कपूर; श्री ब्रिज मोहन; श्री प्रदीप अग्रवाल; श्री ओमप्रकाश (ओम जी); श्री ओमप्रकाश बंसल-सपना; श्री पवन गुप्ता, सेक्टर 132

बचा लें बारिश के पानी को

— **रोहित कौशिक,** वरिष्ठ पत्रकार

इस समय देश के कई हिस्सों में अच्छी बारिश हो रही है। वर्ष के इस जल को हम जितना सहेज लेंगे और जमीन के अंदर जाने देंगे, उतना ही जल संकट को दूर रखेंगें।

इस समय देश के कई हिस्से में अच्छी बारिश हो रही है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम मानसून के दौरान बारिश के पानी को बचाने का कोई प्रयास नहीं करते हैं। इस कारण बारिश में बड़ी मात्रा में जल बेकार बह जाता है। जल संरक्षण के माध्यम से हम बारिश के पानी का सदुपयोग कर सकते हैं। इससे एक ओर जल संकट कम होगा, तो दूसरी ओर हम जल को बेकार बहाने के पाप से भी बच जाएंगे। कृषि की बढ़ती जरूरतों, खाद्यान्न उत्पादन, ऊर्जा उपभोग, प्रदूषण और जल प्रबंधन की कमजोरियों के कारण स्वच्छ जल पर दबाव बढ़ रहा है।

गौरतलब है कि भारत में बारिश के मात्र पंद्रह प्रतिशत जल का ही उपयोग होता है, शेष जल बेकार बहकर समुद्र में चला जाता है। इस मामले में इजरायल जैसे देश ने, जहां वर्षा का औसत 25 सेमी से भी कम है, एक अनोखा उदाहरण पेश किया है। वहां जल की एक बूंद भी बेकार नहीं जाती है। अतिविकसित जल प्रबंधन तकनीक के कारण वहां जल की कमी नहीं होती है। जल संकट से निपटने के लिए हमें भी अपने देश में ऐसा ही उदाहरण पेश करना होगा। वर्षा के जल को जितना हम जमीन के अंदर जाने देंगे, उतना ही हम जल संकट को दूर रखेंगे। इस विधि से मिट्टी का कटाव भी रुकेगा और हमारे देश को सुखे और अकाल का सामना भी नहीं करना पड़ेगा। एक आंकड़े के अनुसार, यदि हम देश के जमीनी क्षेत्रफल में से सिर्फ पांच फीसद क्षेत्र में होने वाली वर्षा के जल का संग्रहण कर सकें, तो एक अरब लोगों को प्रतिव्यक्ति सौ लीटर पानी प्रतिदिन मिल सकता है। आज हालात यह हैं कि वर्षा का 85 फीसद जल बरसाती नदियों के माध्यम से समुद्र में बेकार बह जाता है। फलस्वरूप निचले इलाकों में बाढ़ आ जाती है। यदि इस जल को जमीन के भीतर पहुंचा दिया जाए, तो इससे एक ओर बाढ़ की समस्या काफी हद तक समाप्त हो जाएगी, वहीं दूसरी ओर भूजल स्तर भी बढ़ेगा।

जनसंख्या में हुई तीव्र वृद्धि से हमारे देश में जल की खपत लगातार बढ़ती जा रही है। हालांकि सतही एवं भूमिगत दोनों ही स्रोतों से जल का उपयोग किया जा रहा है, लेकिन भूमिगत जतत पर हमारी निर्भरता कुछ अधिक ही है। भूमिगत जल की अत्यधिक निकासी से इसका जल स्तर लगातार नीचे खिसकता जा रहा है। गौरतलब है कि दुनिया के क्षेत्रफल का लगभग सत्तर फीसद भाग जल से भरा हुआ है, लेकिन पीने लायक मीठा जल सिर्फ तीन फीसद ही है। शेष खारा जल है। इसमें से भी हम सिर्फ एक 'फीसद मीठे जल का ही उपयोग करते हैं। धरती पर उपलब्ध संपूर्ण जल, जल चक्र में चक्कर लगाता रहता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि उद्योगीकरण एवं जनसंख्या विस्फोट के कारण जहां एक ओर जल प्रदूषण बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर जल चक्र भी बिगड़ता जा रहा है। हालांकि विश्व में उपलब्ध कुल जल की मात्रा आज भी उतनी ही है जितनी कि दो हजार साल पहले थी। अंतर है तो बस इतना कि उस समय पृथ्वी की जनसंख्या आज की तुलना में करीब तीन फीसद ही थी। हमारे देश में समस्त उपलब्ध जल के 90 प्रतिशत का उपयोग कृषि उत्पादन में किया जाता है, जिसमें खाद्य उत्पादन का अनुपात 35 प्रतिशत है। यदि कृषि उत्पादन में समुचित जल निकासी एवं जल उपयोग के वैज्ञानिक तरीकों का इस्तेमाल किया जाए, तो बीस फीसद तक जल की बचत हो सकती है। इसी प्रकार दुनिया का लगभग 22 फीसद जल उद्योगों में उपयोग किया जाता है। यदि औद्योगिक क्षेत्र पानी की बचत करना शुरू करे और पानी का दोबारा उपयोग सुनिश्चित करें, तो इस संकट से काफी हद तक बचा जा सकता है।

जल संकट से निपटने हेतु आज भी हमें अपनी पुरानी तकनीक को ही अपनाना होगा। हम स्वयं भी अपने मकान की छत पर वर्षा जल को एकत्रित करके मकान के नीचे भूमिगत अथवा भूमि के ऊपर टैंक में जमा कर सकते हैं। प्रत्येक बारिश के मौसम में सौ वर्ग मीटर आकार की छत पर 65000 लीटर वर्षा जल एकत्रित किया जा सकता है, जिससे चार सदस्यों वाले एक परिवार की पेयजल और घरेलू जल आवश्यकताएं 160 दिनों तक पूरी हो सकती हैं। भारत जैसे देश में जहां पानी का प्रमुख स्रोत बरसात ही है, वहां पर रेन वाटर हार्वेस्टिंग या पानी को जमा करना बेहतर उपाय है। सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेषों में जल संरक्षण के प्रमाण मिलते हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी वर्षा जल से सिंचाई की तकनीक विकसित होने के प्रमाण मिले हैं। अथर्ववेद में जल को दवा कहा गया है, जबकि श्रीस्कंदपुराण में जलाशय निर्माण करने वाले व्यक्ति को स्वर्ग में स्थान मिलने की बात कही गई है। हमें अभी से युद्धस्तर पर जल संरक्षण के सामूहिक प्रयास शुरू कर देने चाहिए।

अध्यक्ष की कलम से... (पृष्ठ 1 का शेष...)

इस महीने कार्यकारणी की बैठक हुई, जिसमें वर्ष 2024–25 की बैलेन्स सीट का अनुमोदन किया।

मित्रों गो अंगीकरण के सर्टिफिकेट गौशाला में तैयार है, आप लोगों से अनुरोध है कि सर्टीफिकेट गौशाला से प्राप्त करें और अपनी गौमाता से मिलें।

मित्रों इस महीने में 7 सितम्बर से श्राद्ध पक्ष शुरू हो रहा है। श्राद्ध पक्ष में किसी भी तरह के किसी भी तरह के किसी भी रूप में गौमाता की सेवा हमारे पूर्वजों और पितरों को तृप्त करती है और गौमाता का विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है। श्राद्ध पक्ष में गौमाता को दलिया भण्डारा खिलाया जा सकता है जो कि आपके पितरों के निमित्त होगा। आप सब के सहयोग की हमेशा अति आवश्यकता रहती है।

मित्रों 14 सितम्बर, 2025 को विहंगम योगी अनंत श्री सद्गुरू सदाफल देव जी महाराज गौशाला आ रहे हैं। आप सभी लोगों से अनुरोध है गौशाला आयें व सदगुरू जी का आशीर्वाद लें।

गोसदन की आत्मनिर्भरता के लिए विभिन्न प्रकल्पों पर विचार निरन्तर जारी है, आपके सहयोग, समर्थन की आशा के साथ हम आप सभी के उज्जवल भविष्य एवं सुख समृद्धि की कामना करते हैं।

आप सभी के निरन्तर सहयोग के लिए अग्रिम आभार सहित!

— आपका अपना

विकास अग्रवाल

(vikas18noida@yahoo.com)

गौशाला में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए गोशाला कार्यकारिणी के सदस्य व कर्मचारी

15 अगस्त को संपन्न हुई गौशाला के संयोजक मंडल की बैठक का दृश्य

नोएडा अथॉरिटी के जनरल मैनेजर श्री जे के अरोड़ा जी एवं सीनियर मैनेजर श्री शर्मा जी का गौशाला भ्रमण पर अभिवादन का दृश्य

जन्माष्टमी उत्सव पर मुख्य यजमान श्री देव वार्ष्णेय एवं उनका परिवार पूजा का दृश्य

इस बार का मासिक हवन बरसात के कारण मन्दिर में सम्पन्न हुआ, का दृश्य

गौशाला भ्रमण एवं निरीक्षण के अवसर पर उत्तर प्रदेश गौ सेवा आयोग के सदस्य श्री विनोद गर्गाचार्य जी के अभिवादन का दृश्य

सम्पादकीय... (पृष्ठ 1 का शेष...)

Nonprofit के लिये हैं या धार्मिक संस्थानों में भी जल संचय संयत्र लगवायें। पहले हम कुआँ का निर्माण करते थे, समाज के दानवीर लोगों के सहयोग से अब हमें समाज की दानशीलता का उपयोग जल संचय संयत्र लगवाने में करना चाहिये। ऐसा प्रयोग अपने नगर में भारत विकास परिषद्, स्वर्णिम कर रही है। आदरणीय प्रवीण अग्रवाल (नारायण ग्रुप) ने ऐसे 5 संयत्र लगवाने में सहयोग का वीणा उठाया है। उन्होंने अपने घर व फैक्ट्री पर भी यह संयत्र ठीक से काम करें ऐसी व्यवस्था की है। हममें से अनेक ऐसे बन्धू हैं जो 300 Mt. से बड़े घरों में रह रहे हैं या व्यवसाय कर रहे हैं। वह सभी पृथ्वी माता के प्रति अपनी आराधना मान अपने यहाँ लगे जल संचय संयत्र को ठीक करायें, जिससे हम जितना पानी प्रयोग करते हैं, उसकी आपूर्ति कुछ मात्रा में की जा सके तथा हम पृथ्वी माता के प्रति अपने उत्तरदायित्व का कुछ अंशमात्र निर्वहन कर सकें।

भारत सरकार ने बड़ी मात्रा में जल संचयन के प्रयास के अंतर्गत अनेक छोटे–छोटे तालाब बनाने का प्रयास किया है जहाँ केवल किसान को जमीन उपलब्ध करानी होती है। तालाब बनाने का काम मनरेगा के तहत सरकार करती है। हर जिले में 75 जल सरोवर बनाने का कार्य भी सरकारी स्तर पर हो रहा है। हमारे कुछ मित्र ''जलाधिकार'' के नाम से इस कार्य में अनेक सालों से लगे हैं।

यह कार्य जब तक नागरिक कर्तव्य के रूप में आन्दोलन नहीं बनेगा तब तक उचित सफलता नहीं मिलेगी।

पृथ्वी रक्षण का यह कार्य गाय संरक्षण से भी बड़ा है। यह बचेगी तो हम सभी बचेंगे। पानी के अभाव में जमीन ऊसर/बंजर हो जाती है। उस पर तिनका भी नहीं उगाया जा सकता है। अतः इस बाढ़ की विभीषिका के मध्य जल संचयन के उपायों पर हम सभी ने कार्य किया तो इस विभीषिका से भी शायद भविष्य में राहत मिले।

इस बार हवन में लगभग 35–36 यजमान परिवार हैं। आप भी अपने परिवार मित्रों के साथ आयें। इसी प्रार्थना के साथ!

– आपका अपना

महेश बाबू गुप्ता
(mahesh@mbgupta.com)

गौसदन में सहयोग के प्रकार

मासिक हवन (प्रातः 9 बजे)	: रू॰ 3,100/– (मास के प्रथम रविवार को – यजमान सहयोग)
गौग्रास योजना	: रू॰ 500 से 5,000/– तक मासिक
हरा चारा सहयोग	: रू॰ 5,100/–
सवामनी दलिया	: रू॰ 5,100/–
गाय अडॉप्शन योजना	: रू॰ 11,000/– (प्रति गाय) (प्रतिवर्ष – गाय की आयु तक)
गौदान	: रू॰ 31,000/–
छप्पन भोग	: रू॰ 31,000/–
भूसा सहयोग	: रू॰ 1,01,000/– (लगभग 1 ट्रक)
खल, चोकर व छिलका	: रू॰ 1,01,000/–

अपील

वर्तमान में गौशाला में लगभग 1700 से अधिक गोवंश हैं। भूसा/चारे का खर्च भी लगातार बढ़ रहा है। गोपाष्टमी में जिन बंधुओं ने भूसा दान की घोषणा की थी, उन सभी से विनम्र निवेदन है कि इस कार्य को यथाशीघ्र सम्पन्न करें।

श्री जी गोसदन

(पंजीकृत सोसायटी सं.–592, अधिनियम सं.–21, सन् 1860 के अर्न्तगत)

भूखण्ड सं. 7, सैक्टर 94, नौएडा (उ.प्र.)

मो. : 8882425010

ई–मेल : shreejeegausadan94@gmail.com

वेबसाइट : www.shreejeegausadan.com

अध्यक्ष : **सीए विकास अग्रवाल** (मो. : 9810015863)

महासचिव : **श्री सुशील भारद्वाज** (मो. : 7982002929)

कोषाध्यक्ष : **सीएस संजय गुप्ता** (मो. : 9873410688)

प्रबन्धक : **श्री संतोष सिंह** (मो. : 7428350639)

दान/सहयोग राशि हेतु जानकारी :

SHREE JEE GAUSADAN

Account No. : **923010022147753**

Name of Bank : **AXIS BANK**
Sector 44, Noida (U.P.)

IFSC Code : **UTIB0001788**

अथवा **QR** कोड स्कैन करें

PRAVEK

100% शुद्ध और पवित्र

200 मिली के पैक में उपलब्ध

गोजल

पाचन क्रिया सुधार हेतु

आयुर्वेद में गाय के गौमूत्र को एक संजीवनी कहा गया है, जो रोगों को भगाए और दीर्घायु प्रदान करे।

प्रवेक गोजल को आसवन के बाद काँच की बोतल में पैक किया जाता है, ताकि वह सभी अशुद्धियों से मुक्त हो व गोजल के स्वाभाविक रुपी अम्लीय गुणों से बचाता हो।

उपयोग

- कृमि रोग
- कण्डू रोग
- कुष्ठ रोग
- दोष जन्य उदर विकार
- अफारा
- मेदोरोग
- अध्यमान, आदि में लाभकारी

मात्रा

20 मिली प्रवेक गौजल को जल में मिलाकर दिन में एक बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार लें।

CUSTOMER CARE
+91 9990990999 | customercare@pravek.com
www.pravek.com